ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 351-355

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

करण्डा विकास खण्ड (जनपद–गाजीपुर, उ0प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना : एक प्रतीक अध्ययन

डॉ0 सुमन सिंह

असिस्टेन्ट प्रो० एवं विभागाध्यक्ष– भूगोल विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चरखारी, जनपद– महोबा (उ0प्र0), भारत

Received-24.06.2022, Revised-26.06.2022, Accepted-30.06.2022 E-mail: drsumansinghs@gmail.com

सारांशः – ***जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण अनेकानेक आर्थिक–सामाजिक पक्षों को प्रकट करता है। जनसंख्या के आर्थिक संघटन का अध्ययन तब तक पूर्ण नही होता, जब तक उस जनसंख्या के व्यावसायिक संगठन का विवरण नहीं दिया जाता। किसी व्यक्ति विशेष के व्यवसाय से अभिप्राय उसके व्यापार, व्यवसाय तथा कार्य से है, अर्थात् जीविकोपार्जन के लिए की जाने वाली उत्पादक आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते है।1 जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना उसके आर्थिक विशेषताओं को स्पष्ट करता है। इससे देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है। इसके अध्ययन से ही पता चलता है कि कोई देश कृषि प्रधान, पशुपालन अथवा उद्योग प्रधान है। व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति, उसके विचार, सामाजिक, दृष्टिकोंण, व्यक्तित्व तथा राजनैतिक सम्बद्धता को भी प्रकट करता है।***

कुंजीभूत शब्द– जनसंख्या, व्यावसायिक संरचना, आर्थिक–सामाजिक पक्ष, आर्थिक संघटन, व्यावसायिक संगठन।

किसी भी देश, प्रदेश या क्षेत्र का व्यावसायिक वितरण एक ऐसा शीशा है, जिससे वहाँ के आर्थिक ढ़ाँचें का सुस्पष्ट चित्रण किया जा सकता है। आधुनिक आर्थिक, सामाजिक परिवर्तनों का मूल्यांकन बिना व्यावसायिक संरचना को समझे अधूरा रह सकता है। अतः इसके सम्यक विवेचन के आधार पर ही आर्थिक–सामाजिक प्रगति की गति और दिशा को निश्चित किया जा सकता है। व्यावसायिक संरचना किसी क्षेत्र–विशेष के जनसंख्या की संरचनात्मक संगठन का द्योतक होता है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना पर बहुत से कारकों का प्रभाव पड़ता है, किन्तु प्राकृतिक संसाधनो की प्रकृति तथा विविधता का प्रभाव सर्वाधिक होता है।4 व्यावसायिक संरचना सामान्यतया क्षेत्र के विकास स्तर, मिट्टी तथा अन्य संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव का द्योतक है।5 यही कारण है कि जनसंख्या के भौगोलिक अध्ययन में व्यावसायिक संरचना के विवेचन पर अधिक बल दिया जाता है। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के अध्ययन की दृष्टि से किसी देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– (1) कार्यशील जनसंख्या तथा (2) अकार्यशील जनसंख्या। कार्यशील जनसंख्या के अन्तर्गत उन लोगों को शामिल किया गया है, जो किसी व्यवसाय, उद्योग एवं नौकरी आदि में लगे हुए हैं। इसके विपरीत अकार्यशील जनसंख्या में उन लोगों को सम्मिलित किया गया है, जो किसी प्रकार का उत्पादन कार्य नहीं करतें जैसे–बच्चें, वृद्ध तथा पराश्रयी आदि। चिकित्सालयों, जेलों तथा अनाथालयों में रहने वाले व्यक्तियों को भी कार्य न करने वालों में शामिल किया गया है।

वर्ष 1981 में कार्यशील जनसंख्या का अनुमान लगाने के लिए समस्त कार्यशील जनसंख्या को दो भागों में बांट दिया गया– पूर्णकालिक एवं सीमान्त कालिक। जिन लोगों ने गत वर्ष में छः माह या उससे अधिक समय तक कार्य किया था, उन्हे पूर्णकालिक एवं जिन्होनें छः माह से कम समय तक कार्य किया था, उन्हें सीमान्त कालिक का नाम दिया गया है।6 प्रस्तुत अध्ययन में करण्डा विकास खण्ड की कार्यरत जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का सम्यक अध्ययन किया गया है। निरन्तर बढ़ती जनसंख्या और बेरोजगारी से जूझता यह क्षेत्र पिछड़ा क्षेत्र बन गया है, और अनेक प्रयासों के बावजूद इसमें सुधार के लक्षण अभी अस्पष्ट हैं।

अध्ययन क्षेत्र– करण्डा विकास खण्ड उत्तर प्रदेश के पूर्वी जनपद गाजीपुर के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र में अवस्थित है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य भूमि कर्क रेखा के उत्तर में 25° 23′ 10"- 25° 35′ 5" उत्तरी अक्षांश तथा 83° 24′ 38" - 83° 33′ 23" पूर्वी देशान्तर के मध्य विस्तृत है। इस प्रकार यह 0° 11′ 55" का अक्षांशीय एवं 0° 8′ 45" का देशान्तरीय विस्तार लिए हुए है। विकास खण्ड का कुल क्षेत्रफल 155.26 वर्ग किमी0 है। यह विकास खण्ड पूर्णतया ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत अवस्थित है, जिसके दक्षिण–पश्चिम एवं दक्षिण–पूर्व में गंगा नदी प्राकृतिक सीमा निर्धारित करती है। विकासखण्ड के उत्तर में गाजीपुर तहसील, पूर्व में जमानियाँ विकासखण्ड, दक्षिण में चन्दौली जनपद एवं पश्चिम में देवकली विकासखण्ड स्थित है। मध्य गंगा घाटी में स्थित करण्डा विकासखण्ड में मुख्यतः गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी दोमट मिट्टी की प्रधानता है। प्रशासकीय दृष्टिकोंण से विकासखण्ड को 11 न्यायपंचायतों में विभक्त गया है, जिसके अन्तर्गत कुल 125 ग्राम (92 आबाद एवं 33 गैर आबाद ग्राम) सम्मिलित है। विकासखण्ड मुख्यालय की जिला मुख्यालय से दूरी लगभग 19 किमी0 है, जबकि इसका निकटतम् रेलवेस्टेशन इससे 10 किमी0 दूर नंदगंज है।

गाजीपुर जनपद में कार्यरत जनसंख्या की अपेक्षा अकार्यरत जनसंख्या बहुत अधिक है। इसका कारण यह है कि आयुवर्ग एवं क्रियाशीलता में शत–प्रतिशत सह–सम्बनध नहीं होता है। साथ ही जनपद में निर्धनता अनुपात भी अधिक है। जनपद में रोजगार

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

के अवसर तो बढ़ें हैं, परन्तु जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि के फलस्वरूप रोजगार तथा जनसंख्या के मध्य असंतुलन की खाई बढ़ती गयी है (तालिका–1)

तालिका–1
कायर्यरत–अकार्यरत जनसंख्या (प्रतिशत में)

वर्ष	जनपद		विकासखण्ड	
	कार्यत जनसंख्या	अकार्यरत जनसंख्या	कार्यत जनसंख्या	अकार्यरत जनसंख्या
1971	58.93	41.07	30.50	69.50
1981	27.43	72.57	30.40	69.60
1991	29.20	70.80	30.37	69.63
2001	31.39	68.61	29.54	70.46
2011	29.39	69.61	27.04	69.46

स्रोत–सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद गाजीपुर।

करण्डा विकास खण्ड की व्यावसायिक संरचना– व्यावसायिक संरचना सामान्तया क्षेत्र के विकास स्तर एवं मिट्टी तथा अन्य संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव का द्योतक है।7 विकासखण्ड के कृषि क्षेत्रों में सामाजिक संरचना में विभिन्नताएं मिलती हैं। यहाँ पर कुछ ऐसे कृषक हैं, जिनके पास तो अपनी निजी भूमि है, जिस पर वे स्वयं खेती करते हैं। दूसरे ऐसे भी कृषक हैं, जो कृषि कार्य तो करते हैं, किंतु उनका भूमि पर कोई स्वामित्व नहीं है। प्रथम प्रकार के कृषक बाहर के मजदूरों के द्वारा अथवा स्वयं इस कार्य को सम्पन्न करते हैं, बाहर के वे मजदूर होते हैं जो मजदूरी पर कार्य करते हैं, किन्तु ये अस्थाई होते हैं। विकासखण्ड में जनपद की भाँति अकार्यरत जनसंख्या अधिक है, जबकि कार्यरत जनसंख्या अपेक्षकृत कम है। जनगणना के चार दशकों 1971,1981,1991 एवं 2001 में सर्वाधिक (30.50%) कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत 1971 में था, इसके उपरान्त क्रमशः घटता गया है। विकासखण्ड में कार्य न करने वालों की संख्या सर्वाधिक है। 2001 में सर्वाधिक (70.46%) एवं 1971 में सबसे कम (69.50%) रही। 1991 में अकार्यरत जनसंख्या 1981 की अपेक्षा अधिक एवं 2001 की अपेक्षा कम रही। इस प्रकार 1971,1981,1991 एवं 2001 में कार्यरत जनसंख्या क्रमशः घटती गयी है, क्योंकि जनसंख्या में जिस दर से वृद्धि हुई है, उसकी अपेक्षा रोजगार के अवसरों में वृद्धि कम रही। विकासखण्ड की कार्यरत जनसंख्या को चार व्यावसायिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है– कृषक, कृषि मजदूर, उद्योग एवं निर्माण कार्य तथा अन्य कार्य। अन्तिम (अन्य कार्य) में पशुपालन, जंगल लगाना, वृक्षारोपण, खान खोदना, व्यापार एवं वाणिज्य, यातायात, संग्रहण एवं संचार को सम्मिलित किया गया है। विकासखण्ड में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना को तालिका–2 में दशार्या गया है)

तालिका–2
विकासखण्ड : व्यावसायिक संरचना (प्रतिशत में)

व्यावसायिक संरचना	1991	2001
कार्यरत जनसंख्या	30.37	29.54
कृषक	50.04	47.63
कृषि मजदूर	22.23	24.43
पारिवारिक उद्योग	7.23	7.24
अन्य कार्य	20.50	20.70
अकार्यरत जनसंख्या	69.63	70.46

स्रोत–सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद गाजीपुर।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि विकासखण्ड की सर्वाधिक जनसंख्या कृषकों की है। 1991 में कृषकों का प्रतिशत 50.04 था, जो 2001 में घटकर 47.63% हो गया। जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि एवं भूमि में कोई वृद्धि नहीं होने के कारण भरण–पोषण हेतु अन्य व्यवसायों यथा मत्स्य पालन, व्यापार, पशुपालन एवं अन्य सीमान्तिक कार्यों की तरफ आर्कषण से कृषकों के प्रतिशत में कमी दृष्टिगत होती है। जनसंख्या में वृद्धि के कारण 1991 (22.23%) की अपेक्षा 2001 (24.43%) में कृषक मजदूरों की संख्या बढ़ गयी है। उद्योग एवं निर्माण कार्य में लगी जनसंख्या 1991 में 7.23% थी, जो 2001में बढ़कर 7.24% हो गयी। लेकिन फिर भी आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या का बहुत अल्प भाग ही पारिवारिक उद्योगों में संलग्न है, जो इसकी निम्न उत्पादकता का परिचायक है। साथ ही कृषि की प्रधानता के कारण ही पारिवारिक उद्योगों की ओर जनसंख्या का झुकाव कम है। अन्य व्यवसाय में लगी जनसंख्या 1991 में 20.50% थी, जो 2001 में बढ़कर 20.70% हो गयी। स्पष्ट है कि जनसंख्या में वृद्धि के साथ–साथ अन्य व्यवसाय में लगी जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ गया है, क्योंकि अपना एवं आश्रित लोगों के भरण–पोषण हेतु अधिकांश जनसंख्या अन्य व्यवसायों में संलग्न होती गयी है। इसके अतिरिक्त जब कृषि

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पर जनसंख्या का भार बढ़ने लगता है तो लोग रोजगार की तलाश में छोटे–छोटे व्यवसाय करना आरम्भ कर देते हैं और इस प्रकार 2001 में अन्य व्यवसाय में लगे व्यक्यिों का प्रतिशत बढ़ गया है।

अतः स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या का स्वरूप घटता–बढ़ता रहा है। बढ़ती जनसंख्या के कारण जहाँ एक आरे कृषक मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई, वहीं भरण–पोषण के अन्य व्यवसायों में भी लोग संलग्न होते रहे हैं। बेरोजगारी की समस्या इस स्तर तक बढ़ गयी है कि इस सम्भाग के बाहर जाने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही है।

कृषि, वन, मत्स्यपालन तथा पशुपालन आदि में लगे लोग प्राथमिक व्यवसाय में आते हैं। इन देशों के विकास को प्रथम चरण में रखा जाता है। जहाँ द्वितीयक उद्योगों (कृषि अथवा प्रकृतिजन्य उद्योगों यथा वस्त्र, चीनी, तेल, कागज व खजिन आदि) की प्रधानता होती है। द्वितीय उद्योग (भारी मशीन, निर्माण उद्योग) विकसित अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। इसको द्वितीय चरण मानते हैं। इसके अन्तर्गत कृषि पर आधारित उद्योग बृहद रूप में विकसित हो तो उसे भी द्वितीय चरण में रखा जाता है। यदि विकसित देशों की जनसंख्या से भारतीय जनसंख्या की व्यवसायगत संरचना की तुलना की जाय तो स्पष्ट होता है कि भारत में 72.60% व्यक्ति कृषि कार्य में लगे हैं, जबकि जापान में केवल 19.40%, ब्रिटेन में 5.0% तथा सं0 रा0 अमेरिका में 12.50% ही कृषि कार्य में लगे हैं। इसके विपरीत हमारे देश में उद्योग में लगे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है, जबकि सं0 रा0 अमेरिका में 30.0% एवं ब्रिटेन में 43.0% व्यक्ति उद्योग में लगे हैं।

कार्यरत जनसंख्या का वितरण– विवेच्य क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण का अध्ययन न्यायपंचायत स्तर पर दो दशकों (1991 एवं 2001) में कर्मकरों के प्रतिशत के आधार पर किया गया है। विवेच्य क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या में 1991 के बाद के दशक में ह्रास की स्थिति परिलक्षित होती है (तालिका–3) ; क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ आर्थिक कार्यो में विकास न हो सका फलतः बेरोगारी बढ़ी है। कार्याशील जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण में विभिन्नता परिलक्षित होती है। तालिका–3 से स्पष्ट है कि 1991 ई0 में सर्वाधिक (35.42%) कार्यशील जनसंख्या कुसुम्हीकलां एवं न्यूनतम (25.90%) कार्यशील जनसंख्या सोकनी न्यायपंचायतों में द्रष्टव्य है, परन्तु 2001 ई0 में कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक (35.18%) प्रतिशत सौरभ न्यायपंचायत एवं न्यूनतम् (24.82%) सोकनी न्यायपंचायत में ही रहा। (तालिका–3)

व्यावसायिक संरचना का क्षेत्रीय प्रतिरूप– विवेच्य क्षेत्र में व्यावसायिक संरचना के क्षेत्रीय वितरण में भी असमान्ता है। 1991 ई0 में सर्वाधिक कृषक (77.93%) मुड़वल न्याय पंचायत तथा न्यूनतम् कृषक (32.30%) मैनपुर न्याय पंचायत में रहे, परन्तु 2001 ई0 में भी वितरण का यही क्रम रहा, जबकि इनके प्रतिशत में अन्तर रहा (तालिका–3)। इनके सामान्य वितरण में कृषकों का प्रतिशत 2001 में 1991 की अपेक्षा कम रहा।

1991 ई0 मे करण्डा विकासखण्ड में सर्वाधिक (40.88%) कृषि मजदूर गोशेन्दपुर न्याय पंचायत एवं न्यूनतम (9.87%) कृषि मजदूर सौरभ न्याय पंचायत में थे, जबकि 2001 में क्रमशः इन्हीं न्याय पंचायतों में अधिकतम् एवं न्यूनतम् प्रतिशत रहा। इनके सामान्य वितरण में कृषि मजदूरों का प्रतिशत 2001 में 1991 ई0 की अपेक्षा अधिक रहा।

विवेच्य क्षेत्र में कृषि की प्रधानता के कारण पारिवारिक उद्योगों की ओर जनसंख्या का झुकाव कम है। यहाँ की कुल जनसंख्या का 7.24% भाग ही इनमें संलग्न है, जिसमें सर्वाधिक (16.50%) प्रतिशत मैनपुर एवं न्यूनतम् (2.81%) सोकनी न्यायपंचायत का है, परन्तु 1991 ई0 में सर्वाधिक (16.31%) प्रतिशत मैनपुर न्यायपंचायत का ही एवं न्यूनतम (2.53%) प्रतिशत कुसुम्हीकलां न्यायपंचायत का था।

1991 ई0 में अन्य व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या का सर्वाधिक (29.35%) प्रतिशत चोचकपुर न्यायपंचायत तथा न्यूनतम् (2.53%) प्रतिशत कुसुम्हीकलां न्यायपंचायत का था।

1991 ई0 में अन्य व्यवसायों में संलग्न जनसंख्या का सर्वाधिक (29.35%) प्रतिशत चोचकपुर न्यायपंचायत तथा न्यूनतम् (5.69%) प्रतिशत मुड़वल न्यायपंचायत में था, जबकि 2001 ई0 में भी उच्चतम् एवं न्यूनतम् प्रतिशत इन्हीं न्यायपंचायतों में ही रहा । इनके सामान्य वितरण में अन्य व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या में 2001 ई0 में (20.70%) 1991 ई0 (20.50%) की अपेक्षा वृद्धि हुई, क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ अन्य व्यवसायों में सलग्न जनसंख्या में भी वृद्धि हुई, किन्तु क्षेत्र में यह वृद्धि सर्वत्र समान नहीं

तालिका–3

करण्डा विकास खण्ड : जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना (प्रतिशत में)

क्र.सं.	न्याय पंचायत	कुल कार्यशील जनसंख्या		कृषक		कृषि मजदूर		पारिवारिक उद्योग		अन्य कार्य	
		1991	2001	1991	2001	1991	2001	1991	2001	1991	2001
१.	कुसुम्हीकलां	35.42	34.36	63.84	60.43	19.78	21.88	2.53	3.64	14.13	14.08
२.	मुड़वल	34.64	33.46	77.93	75.90	13.63	15.64	2.78	2.87	5.69	5.89
३.	सौरभ	35.41	35.18	64.70	61.62	9.87	11.88	3.54	4.72	21.89	21.78
४.	मैनपुर	26.70	25.80	32.30	29.21	29.04	31.05	16.31	16.50	22.35	23.24
५.	[illegible]	32.81	31.62	46.34	44.23	11.42	13.43	16.26	15.47	25.98	26.87
६.	चोचकपुर	28.79	27.68	43.48	40.47	15.94	18.94	11.23	10.30	29.35	30.29
७.	करण्डा	28.90	28.74	34.81	32.80	32.75	34.75	3.71	3.83	28.73	28.62
८.	गोशेन्दपुर	28.33	27.22	34.60	32.60	40.88	43.88	8.40	7.80	16.12	16.06
९.	[illegible]	30.23	30.12	47.37	45.56	35.56	37.56	6.49	6.60	10.38	10.28
१०.	सोकनी	25.90	24.82	50.43	48.42	19.87	21.87	2.90	2.81	26.80	26.90
११.	[illegible]	26.91	26.34	54.74	52.73	15.79	17.79	5.41	5.42	24.06	24.06
१२.	करण्डा विकासखण्ड	30.37	29.84	50.04	47.63	22.23	24.43	7.23	7.24	20.50	20.70

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

स्रोत– अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, जनपद– गाजीपुर, उत्तर प्रदेश।

व्यावसायिक संरचना के और गहन अध्ययन हेतु दो दशकों (1991 एवं 2001) का विश्लेषण ग्राम स्तर पर भी किया गया है, यथा–

कृषक– इस श्रेणी के अन्तर्गत वे व्यक्ति आते हैं, जो अपनी स्वयं की जमीन, सरकार से पट्टे पर प्राप्त जमीन अथवा किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था से बटाई (नकद या वस्तु) या किराया पर ली गयी भूमि या अन्य प्रकार से प्राप्त जमीन पर या तो स्वयं खेती करते हैं, या अपने निर्देशन एवं देख–रेख से उस भूमि पर खेती करवाते है।9 विवेच्य क्षेत्र की कार्यरत जनसंख्या में कृषक सर्वाधिक हैं, जो वर्ष 1991 एवं 2001 में क्रमशः 50.04% एवं 47.63% अंकित हैं। जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि तथा भूमि में कोई सुधार न होने के कारण कृषकों के प्रतिशत में कमी आयी है। आंकाड़ों के विश्लेषण से प्रकट होता है। कि जहाँ एक ओर लखनचंदपुर कलां ग्राम में केवल 2.67% कृषक हैं, वहीं दूसरी ओर पहुंची उर्फ मदनहीं ग्राम में 86.93% तक कृषक हैं।

कृषि मजदूर– कृषि मजदूरों के अन्तर्गत वे लोग सम्मिलित हैं, जो दूसरों की स्वामित्व वाली भूमि पद दैनिक, साप्ताहिक या मासिक मजदूरी प्राप्त कर अपने जीविकोपार्जन का कार्य करते हैं।10 1991 ई0 में अध्ययन क्षेत्र में कुल कार्यरत जनसंख्या के लोग कृषि 22.23% मजदूर थे, जो 2001 ई0 में बढ़कर 24.43% हो गये। यह वृद्धि जनसंख्या वृद्धि के कारण हुई। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर स्थित यह वर्ग अपनी जीविका खेतों में काम करके या पशुपालन के माध्यम मे चलाता है। जिन ग्रामों में अनुसूचित जाति अथवा ऐसे निम्न वर्ग की अधिकता है, वहाँ कृषि मजदूरों का उच्च प्रतिशत देखने को मिलता है, क्योंकि उनकी औरतें एवं बच्चे भी अधिकांशतः कृषि कार्य में संलग्न रहते हैं। ग्राम स्तर पर कृषि मजदूरों के विररण में भिन्नता का उदारण मेहरौली (2.42%) एवं लखनचंनपुर कलां (87.13%) ग्रामों में मिलता है।

पारिवारिक उद्योग– विवेच्य क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या में संलग्न व्यक्तियों का तीसरा वर्ग उद्योग एवं निर्माण कार्य में लगी जनसंख्या का है। इस वर्ग में सबसे कम व्यक्ति संलग्न हैं। इसमें जनगणना वर्ष 1991 एवं 2001 ई0 में क्रमशः 7प23ः एवं 7.24% व्यक्ति लगे थे।

1991 ई0 में पारिवारिक उद्योगों में संलग्न व्यक्तायों का सर्वाधिक (28.34%) प्रतिशत मिश्रौली ग्राम में था क्योंकि यहाँ पर पारिवारिक एवं गैर पारिवारिक उद्योग विकसित हुए हैं। सबसे कम (0.31%) प्रतिशत करैला ग्राम का हैं, क्योंकि यहाँ कृषकों एवं कृषि मजदूरों की संख्या अधिक है।

2001 ई0 में उद्योग में संलग्न जनसंख्या का सर्वाधिक (26.73%) प्रतिशत मानिकपुर खुद्र ग्राम (26.73%) में था जबकि सबसे कम (1.0%) प्रतिशत मुड़वल ग्राम का है। 1991 एवं 2001 ई0 में अधिकांश ग्रामों में विवेच्य क्षेत्र की तुलना में उद्योग एवं निर्माण कार्य में सलंग्न जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है, किन्तु फिर भी विवेच्य क्षेत्र में इनके वितरण में असमानता है।

सर्वेक्षित ग्रामों की व्यावसायिक संरचना– सर्वेक्षित ग्रामों में कार्यरत जनसंख्या सबसे अधिक (39.09%) दीनापुर ग्राम तथा सबसे कम (22.28%) बड़सरा ग्राम में हैं। कृषकों का सर्वाधिक (68.52%) सौरभ ग्राम तथा न्यूनतम (12.22%) प्रतिशत चोचकपुर ग्राम में है। कृषि मजदूर सर्वाधिक (48.18%) प्रतिशत दीनापुर ग्राम तथा न्यूनतम (8.71%) सौरभ ग्राम में है। पारिवारिक एवं गैर पारिवारिक उद्योग में संलग्न लोग सबसे अधिक (22.99%) चोचकपुर ग्राम तथा सबसे कम (1.0%) मुड़वल ग्राम में हैं। अन्य कार्य में संलग्न लोग सबसे अधिक (56.46%) बड़सरा ग्राम तथा सबसे कम (5.58%) मुड़बल ग्राम में हैं। (तालिका–4)।

तालिका–4

सर्वेक्षित ग्रामों की व्यावसायिक संरचना (प्रतिशत में)

ग्राम	कार्यरत जनसंख्या	कृषक	कृषि मजदूर	पारिवारिक उद्योग	अन्य व्यवसाय	अकार्यरत जनसंख्या
कुसुम्हीकलां	37.48	62.64	22.65	3.46	11.25	62.52
मुड़वल	27.76	63.65	29.77	1.00	5.58	72.24
सौरभ	39.00	68.52	8.71	7.02	15.75	61.00
मैनपुर	24.46	32.15	20.39	17.43	30.03	75.54
खुर्द	38.67	57.90	16.03	17.89	8.18	61.33
चोचकपुर	35.81	12.22	23.72	22.99	41.07	64.19
करण्डा	27.45	25.96	34.90	4.04	35.10	72.55
गोशन्देपुर उप.	23.74	30.21	33.95	14.24	21.60	76.26
दीनापुर	39.09	21.42	48.14	1567	14.77	60.91
बड़सरा	22.28	32.22	9.51	1.81	56.46	77.72
धरम्मरपुर उप.	28.77	59.78	14.82	3.05	22.35	71.23

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण– (2006)।

उप. (उपरवार)– विवेच्य क्षेत्र के व्यावसायिक संरचना के विवेचन से स्पष्ट है कि कुल कार्यरत जनसंख्या क्षेत्र के उत्तरी, उत्तरी–पश्चिमी, एवं उत्तरी पूर्वी भाग में अधिक तथा पश्चिमी, पूर्वी एवं दक्षिणी–पूर्वी भाग में कम है। उत्तरी, उत्तरी–पश्चिमी, एवं उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र बाढ़ रहित एवं उपजाऊ भूमि वाला क्षेत्र है, जबकि दक्षिणी भाग बाढ़ से प्रभावित है। अतः उत्तरी, उत्तरी–पश्चिमी एवं उत्तरी–पूर्वी क्षेत्र में जनसंख्या का संक्रेन्द्रण अधिक हुआ है। विवेच्य क्षेत्र के उत्तरी एवं उत्तरी–पश्चिमी भाग में जनसंख्या में कृषक एवं कृषि मजदूरों की अधिकता के कारण जनसंख्या अधिक है। अतः लोग इन क्षेत्रों से अन्यत्र क्षेत्रों की ओर रोजगार एवं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

भरण–पोषण हेतु स्थानान्तरित हो रहे हैं।

आलोच्य क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि पर ही आधारित है। आलोच्य क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात बढ़ाने के लिए हमें सामाजिक कुरीतियों, परम्पराओं एवं पूर्वाग्रह आदि को समाप्त करना होगा। स्त्रियों को कार्यशील बनाने में ग्रामीण क्षेत्रों में नवचेतना का विकास करना होगा, जो असम्भव नहीं तों कठिन अवश्य है। इसके साथ–साथ प्रत्येक न्यायपंचायत मे एक लघु स्तरीय कृषि पर आधारित औद्योगित इकाई की स्थापना होनी चाहिए, तथा उमसें उस क्षेत्र के शिक्षित बेरोजगारों को प्राथमिकता दी जाय, जिससे कार्यरत जनसंख्या में वृद्धि हो सके और क्षेत्र का उन्नत आर्थिक विकास हो सके, ताकि यह क्षेत्र जनपद, प्रदेश और अन्ततः राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में अपना सक्रिय सहयोग दे सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चाँदना आर0सी0, 'जनसंख्या भूगोल' कल्याणी प्रकाश, नई दिल्ली (1987) पृ0–223.
2. सिंह, दुर्गेश कुमार, ''देवरिया जनपद में जनसंख्या परिवर्तन की गत्यात्मकता'' पी–एच0 डी0 शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 1992 ,पृ0–138.
3. सिंह, सुरेश चन्द्र ''जनपद सुल्तानपुर (उ0 प्र0) की जनसंख्या : एक भौगोलिक अध्ययन'', पी–एच0 डी0 शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी 1988, पृ0–108.
4. चाँदना, आर0 सी0, 'जनसंख्या भूगोल का परिचय', कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1980 पृ0–96
5. सिंह, कृष्ण कुमार, ''समन्वित ग्रामीण क्षेत्रीय विकास एवं नियोजन'', ज्ञान विज्ञान प्रकाशन केन्द्र, चितईपुर, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1994, पृ–66
6. मिश्रा, दिनेश कुमार, ''जनपद जौनपुर (उ0 प्र0) की जनसंख्या : एक भौगोलिक अध्ययन,'' पी–एच0 डी0 शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी 1987, पृ0–111.
7. सिंह, कृष्ण कुमार, ''समन्वित ग्रामीण क्षेत्रीय विकास एवं नियोजन'', ज्ञान विज्ञान प्रकाशन केन्द्र, चितईपुर, वाराणसी, प्रथम संस्करण 1994, पृ0–66
8. सिंह, सुरेश चन्द्र ''जनपद सुल्तानपुर (उ0प्र0) की जनसंख्या : एक भौगोलिक अध्ययन'', पी–एच0 डी0 शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी 1988,पृ0–117.
9. राव, बी0पी0, एवं सिंह, देवेन्द्र नाथ, ''सरयूपार मैदान (उ0 प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना'', उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक–22, संख्या–1, जून 1986, पृ0–56
10. राव, बी0पी0, एवं सिंह, देवेन्द्र नाथ, ''सरयूपार मैदान (उ0 प्र0) में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना'', उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक–22, संख्या–1, जून 1986, पृ0–58
11. सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, जनपद–गाजीपुर, उत्तर प्रदेश (1991, 2001)

*****